ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-9* December- 2017
Anthology : The Research

महिला लेखन और स्त्री विमर्श

सारांश

स्त्री ईश्वर की अद्भुत सृष्टि है। स्त्री शील और सौन्दर्य की मूर्ति है। भारत में प्राचीन समय से ही शक्ति उपासना की परम्परा रही है। स्त्री सशक्तिकरण की बात सदियों से चली आ रही है और यही सशक्तिकरण लेखन के माध्यम से भी व्यक्त होता दिखाई दे रहा है। स्त्री अपने सम्मुख खड़ी चुनौतियों का सामना बड़े धैर्य एवं साहस के साथ कर रही है। स्त्री विमर्श अर्थात् स्वत्व को खोजने की प्रक्रिया है। अपनी पहचान शक्ति और सत्ता को जानने की कोशिष करते हुए स्त्री जागरूकता उनके लेखन में व्यक्त होती दिखाई देती है। 60–65 साल पहले महिला लेखन को बहुत सम्मानीय दर्जा प्राप्त नही था, जो दो–चार महिलाएँ लेखन करती थी, उन्हें सुखी महिलाओं का लेखन मानकर या इनका परिवेश सीमित है तो बड़े फलक के मुद्दे कैसे उठाएँगी, गम्भीरता से नहीं लिया जाता था।

मुख्य शब्द : महिला लेखन, स्त्री विमर्श

छवि
मानदेय प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
वी0वी0स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
शामली

प्रस्तावना

स्त्रियों पर जो भी चर्चाएँ हुई वे पुरुषों ने ही की हैं परन्तु पिछले दो तीन दशकों से विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में देखा जा रहा है कि स्त्रियां अपने विषय में प्रत्येक क्षेत्र में देखी जा रही हैं। वे स्वयं को विषय बनाकर चर्चा कर रही हैं साथ ही अपनी समस्याओं से जुड़े विषय अपने लेखन में उठा रही हैं।

75 के आसपास जब महिलाओं के एक बड़े वर्ग ने अपना वर्चस्व स्थापित करना शुरू किया तो समीक्षकों के लिए उन्हे अनदेखा करने जैसा कोई विकल्प शेष नहीं था। उपन्यास के क्षेत्र में स्त्री समस्याओं पर लिखे गए उपन्यासों की बेहद उर्वरा जमीन हिन्दी के रचनात्मक साहित्य में देखी गई है। कृष्णा सोबती की मित्रो मरजानी एक अक्खड़ और दबंग स्त्री की तस्वीर प्रस्तुत करती है तो वहीं ऊषा प्रियंवदा की 'रुकोगी नहीं राधिका' में परम्पराओं और रूढ़ियों के द्वन्द्व में फंसी आधुनिक स्त्री की स्वयं की अस्मिता की खोज है। मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' हिन्दी साहित्य में एक मील का पत्थर है, जो अपने समय की कथा कहता है और हर समय का सच होने के कारण कालातीत भी है। शकुन के जीवन की बड़ी त्रासदी यही है– '.....और क्या यह केवल शकुन की त्रासदी है? कि वह व्यक्ति और माँ के द्वन्द्व में पूरी तरह व्यक्ति बनकर जी सकी और न पूरी तरह माँ बनकर। अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह नकारती हुई स्वयं मातृत्व के लिए संबंधों के सारे नकारात्मक पक्षों को अनदेखा करती हुई, हिन्दुस्तान की हजारों स्त्रियों की यही त्रासदी है। आपका बंटी सिर्फ बच्चे की त्रासदी का उपन्यास नहीं है वरन् शकुन की समस्याओं को भी बहुत गहराई से उठाया गया है।

सन् 1980–85 के बाद हिन्दी में स्त्री विषयक लेखन की जैसे बाढ़ सी आई गई। ममता कालिया के उपन्यास 'बेघर' और 'एक पत्नी के नोट्स' में मध्यवर्गीय शिक्षित महिला का अपने पति के द्वारा एक सामान्य स्त्री की तरह व्यवहार किया जाना तथा किसी भी समय व्यंग्य वाणों का शिकार होना तथाकथित प्रगतिशील और शिक्षित वर्ग को बेनकाब करता है। मृदुला गर्ग का 'चितकोबरा' और 'मैं और मैं' जिसमें एक औरत एवं एक लेखिका के दोनों पहलुओं की कशमकश का बहुत बारीकी के साथ चित्रण किया गया है, इतना ही नहीं इन सबसे बढ़कर मृदुला गर्ग का

'कठगुलाब' जिसमें स्त्रियों के इतने विभिन्न रंग, रूप और शेड्स हैं कि स्त्री विमर्श की कई अवधारणाओं की पोथी बाँची जा सकती है। चित्रा मुद्गल का 'एक जमीन अपनी' और 'आवां' जिसमें एक सामाजिक कार्यकर्ता की जमीनी लड़ाई के संघर्षों का पहली बार हिन्दी साहित्य में बेबाक चित्रण हुआ है। मृणाल पांडे के 'पटरंगपुराण' को पढ़कर ऐसा लगता है कि एक पूरा षहर औरतों के नजरिए से देखा परखा और वर्णित किया जा रहा है जो अपने घूँघट खोलकर और खिड़कियाँ खोलकर बड़ी पैनी निगाह से कस्बे में होने वाले प्रत्येक क्रियाकलाप का जायजा ले रही हैं।

मेहरून्निसा परवेज का आदिवासी परिप्रेक्ष्य में एक स्त्री की त्रासदी का वर्णन है। मंजुल भगत का 'अनारो' जिसमें पहली बार एक 'कामकाजी नौकरानी के रोजी–रोटी के संघर्ष के साथ–साथ उसकी ताकत और स्वाभिमान को रेखांकित किया गया है।

नासिरा शर्मा का 'शाल्मली' जिसमें घर और बाहर अपने अधिकार माँगती आजादी के बाद की उभरती एक अलग किस्म की स्वतंत्रचेता स्त्री है जो पति से संवाद व बराबरी का दर्जा चाहती है। प्रेम की माँग करती है जो उसका अधिकार है। यह पात्र आधुनिक स्त्री के एक बहुत बड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। इस पात्र का सृजन बहुत सूझबूझ के साथ किया गया है। नासिरा शर्मा का 'ठीकरे की मंगनी' जिसमे बचपन में बिना पैसे के लेन देन के मंगनी हो जाती है और लड़का बड़ा होने पर शादी से इंकार कर देता है इस पर भी वह लड़की टूटती नहीं है वरन् अपना एक घर बनाकर अपना अस्तित्व स्थापित करती है और जब वही लड़का लौटकर आता है तो उसे अस्वीकार करती है।

गीतांजलि श्री का 'माई' जिसमें गाँव और कस्बे की एक औरत अपने बच्चों और परिवार के लिए अपने को तिल–तिल होम करती है और उसका मिटना भी उसके बच्चों की चिंगारी और अपनी रीढ़ की हड्डी सीधी रखने का जज्बा जगा जाता है।

प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता' और 'पीली आँधी' जिसमें रूढिवादी मारवाडी परिवार की एक लड़की का विद्रोही निकल आना किस प्रकार पूरे समाज को उसके खिलाफ खड़ा कर देता है, का सम्पूर्ण वृतान्त है। मैत्रेयी पुश्पा का 'इदन्नमम्' और 'चाक' पिछली शती की महिलाओं के कद्दावर होने का आज के परिप्रेक्ष्य में समूचा बयान है। नारीवादी लेखन आज के समय की आवश्यकता है। आधुनिकता और उदारवादी सोच के बाद भी स्त्रियों के उत्थान में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ। आज भी स्त्रियाँ समझौतों के दोहरे कार्यभार के बीच पिस रही हैं। पुरुष प्रधान समाज की जड़े इतनी गहरी हैं कि उन्हे परिवर्तित करना वास्तव में एक बड़ी जंग लड़ने के समान है। यद्यपि स्त्रियाँ प्रत्येक क्षेत्र में अपनी–अपनी लड़ाई अपनी–अपनी तरह से लड़ रही हैं जिससे कि स्त्रियों को पारम्परिक दासता से मुक्ति दिलाने में सफल हो सकें। हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श और विचार इतने बौद्धिक स्तर पर हैं कि वास्तव में जिन महिलाओं को जागरूकता की आवश्यकता है, यह उन तक पहुँच ही नहीं पाते हैं। वास्तव में यह कार्य साहित्य के विमर्शकारों से कहीं अधिक महिला संगठन और जमीनी तौर पर जुड़ी कार्यकर्त्ता कर रही हैं।

20वीं सदी के उत्तरार्द्ध की हिन्दी लेखिकाएँ स्त्री विमर्श के नाम पर जहाँ पुरुष समाज के विरूद्ध खड़ी नजर आती हैं वहीं स्वयं भी पुरुषवादी मानसिकता की शिकार होती जा रही हैं, जो स्त्री विमर्श का विशय नहीं है। व्यापक अर्थ में स्त्री विमर्श स्त्री जीवन के अनछुए अनजाने पीड़ा जगत को व्यक्त करने का अवसर देता है। परन्तु उसका ध्येय स्थिति पर पश्चाताप करना अथवा यथास्थिति स्वीकार करना नहीं वरन् इनके जिम्मेदार तथ्यों की खोज करना भी है। स्त्री मुक्ति का अर्थ पुरुश हो जाना नहीं है। स्त्री की अपनी प्राकृतिक विषेशताएँ हैं। उनके साथ ही समाज द्वारा बनाये गये स्त्रीत्व के बंधनों से मुक्ति के साथ, मानवता की दिशा में कदम बढ़ाना सच्चे अर्थो में स्वतंत्रता है। आधुनिक साहित्य में स्त्री विमर्श सर्वाधिक चर्चित विशय रहा है। 'सीमोन द बोउवार' की 'द सेकण्ड सेक्स' का हिन्दी अनुवाद कर प्रभा खेतान ने स्त्री विमर्श की नींव तैयार की। विमर्षात्मक लेखन 19वीं सदी से ही चला आ रहा है, किन्तु उसमें आया बदलाव सराहनीय है। 2007 में प्रकाशित प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' आज का स्त्री लेखन है जो एक विवाहित पुरुश से अपने सम्बन्धों को साहस के साथ स्वीकारती है।

आज लेखिकाएं अपने जीवन का समग्र चित्रण बेबाकी से अपनी आत्मकथाओं में कर रही हैं। जिनमें दिनेश नन्दिनी डालमिया, मैत्रेयी पुष्पा, अजीत कौर, अमृता प्रीतम, तसलीमा नसरीन आदि के साथ ही अन्य भाषा से अनूदित महिला आत्मकथाएं भी अपनी साहसिक अभिव्यक्ति के कारण निरन्तर चर्चा का विषय रही हैं। जिनमें दिनेश नन्दिनी डालमिया, मैत्रेयी पुष्पा, अजीत कौर, अमृता प्रीतम, तसलीमा नसरीन आदि के साथ ही अन्य भाषा से अनूदित महिला आत्मकथाएं भी अपनी साहसिक अभिव्यक्ति के कारण निरन्तर चर्चा का विशय रही हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक लेखिकाएं स्त्री के प्रति समाज की मानसिकता व रूढ़ियों पर आधारित पारिवारिक बंधनो से मुक्ति की आकांक्षा में सतत् प्रत्यत्नशील दिखाई पड़ती हैं। समकालीन महिला लेखन 'स्त्री की

अस्मिता की खोज का लेखन' कहा जा सकता है। आज की जागरूक स्त्री ने अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से अपने अस्तित्व को स्थापित किया है। सामाजिक अस्वीकार और आत्मस्वीकार के दो ध्रवों के मध्य वह अपने स्त्री होने को नये सिरे से परिभाशित कर रही है। तसलीमा नसरीन स्त्री अधिकारों की जोरदार आवाज उठाते हुए कहती है 'मर्दो के साथ सामाजिक सम्पर्क भले हो, लेकिन हमारा परिचय मर्दो की माँ, बहन, बेटी, दादी, नानी, जेठी काकी न होकर मेरा पृथक अस्तित्व है। हम औरते, मर्द या मर्द ाासित समाज की सम्पत्ति नहीं हैं, हम इंसान हैं।'' समकालीन महिला लेखन में स्त्री पति को परमेश्वर नहीं मानना चाहती आज पति परमेश्वर का चमचमाता प्रेम काला पड़ गया है। उसने समझ लिया है कि वह न तो पैर की जूती है और न ही दासी। पत्नी की अग्नि परीक्षा लेने और गृह निश्कासन के जन्मसिद्ध पुरूषीय एकाधिकार चरमरा उठे हैं। विवाह संस्था आज समाज व्यवस्था की मजबूत शर्त न होकर प्रेम को आधार मानने लगी है। आज स्त्री ने पुरूषीय अहम्, शील और सतीत्व के रक्षा के नाम पर बलि देने से इंकार कर दिया। आज स्त्री न सीता की तरह भूमि समाधि लेगी, न अग्नि परीक्षा देगी, न कुएँ मे कूदेंगी, न जलकर मरेगी, न छल से ही कोई उसकी हत्या कर सकता है। आज वह अंगारों पर चलना सीख गई है और जो अंगारों पर चलना सीख जाता है वह कुन्दन बन जाता है। अपने हक को पाने के लिए उसके अन्दर विद्रोह की चिंगारियां नहीं लपटें उठ रही हैं। अब वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पारदर्षी बुद्धि की स्वामिनी बन गई है। समकालीन महिला लेखन में स्त्री अति आधुनिक ढ़ंग के खतरों से टकरा रही है। आवां उपन्यास में किषोरी बाई की बेटी सुनंदा पति की इच्छानुसार धर्म परिवर्तन नहीं करती है चाहे उसे इसकी सजा ही क्यों न भुगतनी पड़े। बिरादरी में अपने पति की नाक बचाने के लिए वह अपना नाम और धर्म बदलने से साफ इन्कार कर देती है। वह बच्चे को जन्म देती है और विवाह संस्था को ढुकराते हुए कहती है–'मेरा मातृत्व विवाह के टुच्चे प्रमाण पत्र का मोहताज नहीं है'। यहां सुनदा सम्पूर्ण पुरुष समाज से टकराती दिखाई दे रही है स्त्री ने स्वयं को चरित्र और नैतिकता के पैमाने पर कसना छोड़ दिया है। आज वह नैतिक मान्यताओं का मूल्यांकन जरूरत के अनुसार करने लग गई है। स्त्री विमर्श पुरूष के वर्चस्व से उसकी अधिकारवादी सत्ता और उपभोक्तावादी मानसिकता से टकराता हुआ नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की मांग करता है। 'स्त्री विमर्श का एक उद्देश्य पुरुष प्रधान समाज और उसकी संस्कृति द्वारा निर्मित अपनी पुरानी नई छवियों से लड़ना और उनसे मुक्ति प्राप्त करना है। इस संदर्भ में वह सीमोन द बोउआर की यह बात बखूबी ध्यान में रखती है कि स्त्री स्वतंत्रता का अर्थ है कि स्त्री पुरुश से जिस पारम्परिक संबंध को निभा रही है, उससे मुक्त हो।' लेखिकाओं ने स्पश्ट किया है कि स्त्रियां मात्र वस्तु या कठपुतली नहीं हैं वरन् वे वास्तव में इंसान हैं जिनकी अपनी इच्छाएं हैं, अपने गोपनीय कोने हैं। लेखिकाओं ने इन उपन्यासों में नारी के मानवी रुप को प्रस्तुत किया है। सामाजिक संरचना में स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान युग में नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। वह पुरुश की छाया मात्र न बनकर स्वयं आत्मनिर्भर बनना चाहती है। विभिन्न कर्मक्षेत्रों में वह अपनी सक्रिय भूमिका द्वारा अपनी अबला संज्ञा को नकारने के प्रयास में सफल है। स्त्रियों ने एकाधिकार वाले क्षेत्रों में कदम रखकर यह साबित कर दिया है कि स्त्रियां कुछ भी करने में सक्षम हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *तसलीमा नसरीन :औरत का कोई देश नहीं पृष्ठ–44*
2. *दयाशंकर : नारी विमर्श की अवधारणा, चुनौतियां और सीमाएं पृष्ठ–63*
3. *चित्रा मुद्गल : आवां, 'एक जमीन अपनी'*
4. *मंजुल भगत : अनारो*
5. *प्रभाखेतान : 'छिन्नमस्ता', 'पीली आँधी', 'अन्या से अनन्या'*
6. *मैत्रेयी पुष्पा : चाक, इदन्नमम*
7. *नासिरा शर्मा : 'शाल्मली', 'ठीकरे की मंगनी'*
8. *गीतांजलि श्री : 'माई'*
9. *मृणाल पांडे : 'पटरंगपुराण'*
10. *सीमोन द बोउवार' 'द सेकण्ड सेक्स'*